आयातुहा 22 | 58 सूरतुल मुजादलति मदनिय्यतुन 108 | रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝١

1. बेशक अल्लाहने उस औ़रत की बात सुन ली है जो आप से अपने शौहर के बारे में तकरार कर रही थी और अल्लाह से फ़रियाद कर रही थी, और अल्लाह आप दोनों के बाहमी सवालो जवाब सुन रहा था, बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٢

2. तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर बैठते हैं (या'नी येह केह बैठते हैं कि तुम मुझ पर मेरी मां की पुश्त की तरह हो।) तो (येह केहने से) वोह उनकी माएं नहीं (हो जातीं) उनकी माएं तो सिर्फ़ वोही हैं जिन्हों ने उनको जना है, और बेशक वोह लोग बुरी और झूटी बात केहते हैं और बेशक अल्लाह ज़रूर दर गुज़र फ़रमानेवाला बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٣

3. और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर बैठें फिर जो कहा है उस से पलटना चाहें तो एक गरदन (ग़ुलाम या बांदी) का आज़ाद करना लाज़िम है क़ब्ल इसके कि वोह एक दूसरे को मस करें, तुम्हें इस बातकी नसीहत की जाती है, और अल्लाह उन कामों से ख़ूब आगाह है जो तुम करते हो।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ

4. फिर जिसे (ग़ुलाम या बांदी) मुयस्सर न हो तो दो माह मुतवातिर रोज़े रखना (लाज़िम है) क़ब्ल इसके कि वोह एक दूसरे को मस करें, फिर जो शख़्स इसकी (भी) ताक़त न रखखे तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना (लाज़िम है), येह इस लिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान रखखो, और येह अल्लाह की

رَسُوْلِهٖ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴﴾

(मुक़र्रर कर्दह) हुदूद हैं, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ
كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ وَ قَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ؕ وَ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۵﴾

5. बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से अ़दावत रखते हैं वोह इसी तरह ज़लील किए जाएंगे जिस तरह उनसे पहले लोग ज़लील किए जा चुके हैं और बेशक हमने वाज़ेह आयतें नाज़िल फ़रमा दी हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अज़ाब है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَ نَسُوْهُ ؕ
وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۶﴾ ع

6. जिस दिन अल्लाह उन सब लोगों को (दोबारा ज़िन्दा कर के) उठाएगा फिर उन्हें उनके आ'माल से आगाह फ़रमाएगा, अल्लाहने (उनके) हर अ़मल को शुमार कर रखखा है हालांकि वोह उसे भूल (भी) चुके हैं, और अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला' (और आगाह) है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ
نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَ لَا
خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَ لَاۤ اَدْنٰى
مِنْ ذٰلِكَ وَ لَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ
اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۷﴾

7. (ऐ इन्सान !) क्या तुझे मा'लूम नहीं कि अल्लाह उन सब चीज़ों को जानता है जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं,कहीं भी तीन (आदमियों) की कोई सरगोशी नहीं होती मगर येह कि वोह (अल्लाह अपने मुहीत इल्मो आगही के साथ) उनका चौथा होता है और न ही कोई पांच (आदमियों) की सरगोशी होती है मगर वोह (अपने इल्मे मुहीत के साथ) उनका छटा होता है, और न उससे कम (लोगों) की और न ज़ियादा की मगर वोह (हमेशा) उनके साथ होता है जहां कहीं भी वोह होते हैं, फिर वोह क़ियामत के दिन उन्हें उन कामों से ख़बरदार करेगा जो वोह करते रहे थे, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ
النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ
وَ يَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ

8. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से मना' किया था फिर वोह लोग वोही काम करने लगे जिससे रोके गए थे और वोह गुनाह और सरकशी और ना फ़रमानिए रसूल (ﷺ) से मुतअ़ल्लिक़ सरगोशियां

وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَ اِذَا جَآءُوْكَ
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ
يَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْ لَا يُعَذِّبُنَا
اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ
يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٨

करते हैं और जब आप के पास ह़ाज़िर होते हैं तो आपको उन (ना ज़ेबा) कलिमात के साथ सलाम करते हैं जिनसे अल्लाहने आपको सलाम नहीं फ़रमाया और अपने दिलों में केहते हैं कि (अगर येह रसूल सच्चे हैं तो) अल्लाह हमें इन (बातों) पर अ़ज़ाब क्यों नहीं देता जो हम केहते हैं? उन्हें दोज़ख़ (का अ़ज़ाब) ही काफ़ी है, वोह उसीमें दाख़िल होंगे, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَ تَنَاجَوْا بِالْبِرِّ
وَ التَّقْوٰى ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٩

9. ऐ ईमानवालो ! जब तुम आपस में सरगोशी करो तो गुनाह और ज़ुल्मो सरकशी और ना फ़रमानिए रिसालत मआब (ﷺ) की सरगोशी न किया करो और नेकी और परहेज़गाारी की बात एक दूसरे के कान में केह लिया करो, और अल्लाह से डरते रहो जिसकी तरफ़ तुम सब जमा' किए जाओगे।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَيْسَ بِضَآرِّهِمْ
شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٠

10. (मन्फ़ी और तख़रीबी) सरगोशी महज़ शैतान ही की तरफ़ से होती है ताकि वोह ईमानवालों को परेशान करे हालांकि वोह (शैतान) उन (मोमिनों) का कुछ बिगाड़ नहीं सक्ता मगर अल्लाह के हुक्म से, और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ
تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا
يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَ اِذَا قِيْلَ
انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١

11. ऐ ईमानवालो ! जब तुम से कहा जाए कि (अपनी) मज्लिसों में कुशादगी पैदा करो तो कुशादा हो जाया करो अल्लाह तुम्हें कुशादगी अ़ता फ़रमाएगा और जब कहा जाए खड़े हो जाओ तो तुम खड़े हो जाया करो, अल्लाह उन लोगों के दरजात बुलंद फ़रमा देगा, जो तुम में से ईमान लाए और जिन्हें इ़ल्म से नवाज़ा गया, और अल्लाह उन कामों से जो तुम करते हो ख़ूब आगाह है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

12. ऐ ईमानवालो ! जब तुम रसूल (ﷺ) से कोई राज़ की बात तन्हाईमें अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी राज़दाराना बात केहने से पहले कुछ सदक़ा-व-ख़ैरात कर लिया करो, येह (अ़मल) तुम्हारे लिए बेहतर और पाकीज़ा तर है, फिर अगर (ख़ैरात के लिए) कुछ न पाओ तो बेशक अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾ ع

13. क्या (बारगाहे रिसालत (ﷺ)में) तन्हाई-व-राज़दारी के साथ बात करने से क़ब्ल सदक़ातो ख़ैरात देने से तुम घबरा गए? फिर जब तुमने (ऐसा) न किया और अल्लाहने तुमसे बाज़ पुर्स उठा ली (या'नी येह पाबंदी उठा दी) तो (अब) नमाज़ क़ाइम रखखो और ज़कात अदा करते रहे और अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ) की इताअ़त बजा लाते रहो, और अल्लाह तुम्हारे सब कामों से ख़ूब आगाह है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾

14. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसी जमाअ़त के साथ दोस्ती रखते हैं जिन पर अल्लाहने गज़ब फ़रमाया, न वोह तुममें से हैं और उनमें से हैं और झूटी क़स्में खाते हैं ह़ालांकि वोह जानते हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

15. अल्लाहने उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब तैयार फ़रमा रखखा है, बेशक वोह बुरा (काम) है जो वोह कर रहे हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾

16. उन्होंने अपनी (झूटी) क़स्मों को ढाल बना लिया है सो वोह (दूसरों को) राहे ख़ुदा से रोकते हैं, पस उनके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ

17. अल्लाह (के अ़ज़ाब) से हरगिज़ न ही उनके माल

اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۷﴾
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ
لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَ يَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ
الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۸﴾
اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ
ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ
اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿۲۰﴾
كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۱﴾

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ
اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ
اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ
عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَ اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ
مِّنْهُ ؕ وَ يُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

उन्हें बचा सकेंगे और न उनकी औलाद ही (उन्हें बचा सकेंगी) येही लोग अहले दोज़ख़ हैं, वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

18. जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा ज़िन्दा करके) उठाएगा तो वोह उसके हुज़ूर (भी) क़स्में खा जाएंगे जैसे तुम्हारे सामने क़स्में खाते हैं और वोह गुमान करते हैं कि वोह किसी (अच्छी) शय (या'नी रविश) पर हैं आगाह रहो कि येह लोग झूटे हैं।

19. उन पर शैतानने ग़ल्बा पा लिया है सो उसने उन्हें अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया है, येही लोग शैतान का लश्कर हैं, जान लो कि बेशक शैतानी गिरोह के लोग ही नुक़्सान उठानेवाले हैं।

20. बेशक जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से अ़दावत रखते हैं वोही ज़लील तरीन लोगों में से हैं।

21. अल्लाहने लिख दिया है कि यक़ीनन मैं और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब हो कर रहेंगे, बेशक अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला बड़े ग़ल्बेवाला है।

22. आप उन लोगों को जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कभी उस शख़्स से दोस्ती करते हुए न पाएंगे जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से दुश्मीन रखता है ख़्वाह वोह उनके बाप (और दादा) हों या बेटे (और पोते) हों या उनके भाई हों या उनके क़रीबी रिश्तेदार हों, येही वोह लोग हैं जिनके दिलोंमें उस (अल्लाह)ने ईमान सब्त फ़रमा दिया है और उन्हें अपनी रूह (या'नी फ़ैज़े ख़ास) से तक़विय्यत बख़्शी है, और उन्हें (ऐसी) जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾ ع ۳ ۹ ۳

बेह रही हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, अल्लाह उनसे राज़ी हो गया है और वोह अल्लाह से राज़ी हो गए हैं, येही अल्लाह (वालों) की जमाअ़त है, याद रखखो ! बेशक अल्लाह (वालों) की जमाअ़त ही मुराद पानेवाली है।

आयातुहा 24 | 59 सूरतुल ह़श्रि मदनिय्यतुन 101 | रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱﴾

1. जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है (सब) अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं और वोही ग़ालिब है ह़िक्मतवाला है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَ قَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَ اَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۲﴾

2. वोही है जिसने उन काफ़िर किताबियों को (या'नी बनू नज़ीर को) पहली जिला वतनीमें घरों से (जमा' कर के मदीने से शाम की तरफ़) निकाल दिया, तुम्हें येह गुमान (भी) न था कि वोह निकल जाएंगे और उन्हें येह गुमान था कि उनके मज़बूत क़िल्एु उन्हें अल्लाह (की गिरफ़्त) से बचा लेंगे, फिर अल्लाह (के अ़ज़ाब)ने उनको वहां से आ लिया जहां से वोह गुमान (भी) न कर सक्ते थे, और उस (अल्लाह)ने उनके दिलों में रो'बो दबदबा डाल दिया वोह अपने घरों को अपने हाथों और अहले ईमान के हाथों वीरान कर रहे थे, पस ऐ दीदए बीनावालो ! (इससे) इ़ब्रत ह़ासिल करो।

وَ لَوْ لَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَ لَهُمْ

3. और अल्लाहने उनके ह़क़में जिला वतनी लिख न दी होती तो वोह उन्हें दुनिया में(और सख़्त) अ़ज़ाब देता,

فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝٣

और उनके लिये आख़िरत में (भी) दोज़ख़का अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤

4. येह इस वजह से हुआ कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से शदीद अ़दावत की (उनका सरग़ना का'ब बिन अशरफ़ बदनाम गुस्ताख़े रसूल ﷺ था) और जो शख़्स अल्लाह (और रसूल ﷺ की) मुख़ालिफ़त करता है तो बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

5. ऐ मोमिनो ! यहूद बनू नज़ीर के मुहासिरे के दौरान) जो खजूर के दरख़्त तुम ने काट डाले या तुमने उन्हें उनकी जडों पर खड़ा छोड़ दिया तो (येह सब) अल्लाह ही के हुक्म से था और इस लिये कि वोह ना फ़रमानों को ज़लीलो रुस्वा करे।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

6. और जो (अम्वाले फ़ै) अल्लाह ने उनसे (निकाल कर) अपने रसूल (ﷺ) पर लौटा दिए तो तुमने न तो उन (के हुसूल) पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, हां ! अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़ल्बा-व-तसल्लुत अ़ता फ़रमा देता है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ी क़ुद्रत रखने वाला है।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَاۗءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

7. जो (अम्वाले फ़ै) अल्लाह ने (क़ुरैज़ा, नज़ीर, फ़िदक, ख़ैबर, उ़रैना समैत दीगर जंग के मफ़्तूहा) बस्तियोंवालों से (निकाल कर) अपने रसूल (ﷺ) पर लौटाए हैं वोह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के लिए हैं और (रसूल ﷺ के) क़राबत दारों (या'नी बनू हाशिम और बनू अल-मुत्तलिब) के लिए और (मुआ़शरे के आ़म) यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए हैं (येह निज़ामे तक़्सीम इसलिए है) ताकि (सारा माल सिर्फ़) तुम्हारे मालदारों के दरमियान ही न गर्दिश करता रहे (बल्कि मुआ़शरे के तमाम तब्क़ात में गर्दिश करे) और जो कुछ

شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝٧ وقف لازم

रसूल (ﷺ) तुम्हें अ़ता फ़रमाएं सो उसे ले लिया करो और जिससे तुम्हें मना' फ़रमाएं सो (उससे) रुक जाया करो, और अल्लाह से डरते रहो (या'नी रसूल ﷺ की तक़्सीमो अ़ता पर कभी ज़बाने ता'न न खोलो) बेशक अल्लाह सख्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ
يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا
وَّ يَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ ۝٨

8. (मज़्कूरा बाला माले फ़ै) नादार मुहाजिरीन के लिए (भी) है जो अपने घरों और अपने अम्वाल (और जाइदादों) से बाहर निकाल दिए गए हैं, वोह अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ा-व-खुशनूदी चाहते हैं और (अपने मालो वतन की कु़रबानी से) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मदद करते हैं, येही लोग ही सच्चे मोमिन हैं।

وَ الَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ الْاِيْمَانَ
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ
اِلَيْهِمْ وَ لَا يَجِدُوْنَ فِيْ
صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَ
يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ
بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ قف وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ ۝٩

9. (येह माल उन अन्सार के लिये भी है) जिन्हों ने उन (मुहाजिरीन) से पहले ही शहरे (मदीना) और ईमान को घर बना लिया था। येह लोग उनसे मह़ब्बत करते हैं जो उनकी तरफ़ हिजरत कर के आए हैं, और येह अपने सीनोंमें (माल) की निस्बत कोई तलब (या तंगी) नहीं पाते जो उन (मुहाजिरीन) को दिया जाता है और अपनी जानों पर उन्हें तर्जीह़ देते हैं अगरचे खुद उन्हें शदीद ह़ाजत ही हो, और जो शख़्स अपने नफ़्स के बुख़्ल से बचा लिया गया पस वोही लोग ही बा मुरादो कामयाब हैं।

وَ الَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَ لَا
تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠ ع

10. और वोह लोग (भी) जो उन (मुहाजिरीनो अन्सार) के बा'द आए (और) अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी, जो ईमान लाने में हम से आगे बढ़ गए और हमारे दिलों में ईमानवालों के लिए कोई कीना-व-बुग्ज़ बाक़ी न रख, ऐ हमारे रब ! बेशक तू बहुत शफ़्क़त फ़रमानेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ
لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَ لَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا
اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾
لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ
وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ
لَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫
ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲﴾
لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ
مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۳﴾
لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى
مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ
بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ
جَمِيْعًا وَّ قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ۚ
كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا
ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿۱۵﴾ۚ

11. क्या आपने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा जो अपने उन भाइयों से केहते हैं जो अहले किताबमें से काफ़िर हो गए हैं कि अगर तुम (यहां से) निकाले गए तो हम भी ज़रूर तुम्हारे साथ ही निकल चलेंगे और हम तुम्हारे मुआ़मले में कभी भी किसी एक की भी इताअ़त नहीं करेंगे और अगर तुमसे जंग की गई तो हम ज़रूर-बिज़-ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वोह यक़ीनन झूटे है।

12. अगर वोह (कुफ़्फ़ारे यहूद मदीना से) निकाल दिए गए तो येह (मुनाफ़िक़ीन) उनके साथ (कभी) नहीं निक्लेंगे, और अगर उनसे जंग की गई तो येह उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर उन्होंने उनकी मदद की (भी) तो ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उनकी मदद (कहीं से) न हो सकेगी।

13. (ऐ मुसल्मानो !) बेशक उनके दिलों में अल्लाह से (भी) ज़ियादा तुम्हारा रो'ब और ख़ौफ़ है, येह इस वजह से कि वोह ऐसे लोग हैं जो समझ ही नहीं रखते।

14. वोह (मदीने के यहूद और मुनाफ़िक़ीन) सब मिल कर (भी) तुमसे जंग न कर सकेंगे सिवाए क़िल्आ़ बंद शहरों में या दीवारों की आड़में, उनकी लड़ाई उनके आपस में (ही) सख़्त है, तुम उन्हें इकठ्ठा समझते हो हालांकि उनके दिल बाहम मुतफ़र्रिक़ हैं, येह इसलिए कि वोह लोग अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

15. (उनका ह़ाल)उन लोगों जैसा है जो उनसे पहले ज़मानए क़रीब में ही अपनी शामते आ'माल का मज़ा चख चुके हैं (या'नी बद्र में मुशरिकीने मक्का, और यहूद में से बनू नज़ीर,बनू क़ैनक़ाअ़-व-बनू क़ुरैज़ा वग़ैरह) और उनके लिए (आख़िरत में भी) दर्दनाक अ़ज़ाब है।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

16. (मुनाफ़िक़ों की मिसाल) शैतान जैसी है जब वोह इन्सान से केहता है कि तू काफ़िर हो जा, फिर जब वोह काफ़िर हो जाता है तो (शैतान) केहता है मैं तुझ से बेज़ार हूं, बेशक मैं अल्लाह से डरता हूं जो तमाम जहानों का रब है ।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ ع ٢ ٧ ٥

17. फिर उन दोनों का अंजाम येह होगा कि वोह दोनों दोज़ख़ में होंगे हमेशा उसी में रहेंगे, और ज़ालिमों की येही सज़ा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

18. ऐ ईमानवालो ! तुम अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स को देखते रेहना चाहिए कि उसने कल (क़ियामत) के लिए आगे क्या भेजा है, और तुम अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह उन कामों से बा ख़बर है जो तुम करते हो।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾

19. और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भुला बैठे फिर अल्लाहने उनकी जानों को भी उनसे भुला दिया (कि वोह अपनी जानों के लिए भी कुछ भलाई आगे भेज देते) वोही लोग ना फ़रमान हैं।

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. अहले दोज़ख़ और अहले जन्नत बराबर नहीं हो सक्ते, अहले जन्नत ही कामयाबो कामरान हैं।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. अगर हम येह क़ुर्आन किसी पहाड़ पर नाज़िल फ़रमाते तो (ऐ मुख़ातिब !) तू उसे देखता कि वोह अल्लाह के ख़ौफ़ से झुक जाता, फट कर पाश पाश हो जाता और येह मिसालें हम लोगों के लिए बयान कर रहे हैं ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾

22. वोही अल्लाह है जिसके सिवा मा'बूद नहीं, पोशीदह और ज़ाहिर को जाननेवाला है, वोही बेह़द रह़मत फ़रमानेवाला निहायत महरबान।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. वोही अल्लाह है जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं (ह़क़ीक़ी) बादशाह है हर ऐब से पाक है, हर नुक़्स से सालिम (और सलामती देनेवाला) है, अम्नो अमान देनेवाला, (और मो'जिज़ात के ज़रीए रसूलों की तस्दीक़ फ़रमानेवाला) है मुह़ाफ़िज़ो निगेहबान है, ग़ल्बा-व-इ़ज़्ज़तवाला है, ज़बर दस्त अ़ज़मतवाला है, सल्तनतो किब्रियाईवाला है, अल्लाह हर उस चीज़ से पाक है जिस वोह उसका शरीक ठेहराते हैं।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾ ع ۳/۶

24. वोही अल्लाह है जो पैदा फ़रमानेवाला है, अ़दम से वुजूद में लानेवाला (या'नी ईजाद फ़रमानेवाला) है, सूरत अ़ता फ़रमानेवाला है, (अल ग़रज़) सब अच्छे नाम उसी के हैं, उसके लिए वोह (सब) चीज़ें तस्बीह़ करती हैं जो आस्मानों और ज़मीन में हैं, और वोह बड़ी इ़ज़्ज़तवाला है और बड़ी ह़िक्मतवाला है।

आयातुहा 13 | 60 सूरतुल मुम्तह़िनति मदनिय्यतुन 91 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَ عَدُوَّكُمْ اَوْلِیَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَ قَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ یُخْرِجُوْنَ

1. ऐ ईमानवालो ! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम (अपनी) दोस्ती के बाइ़स उन तक ख़बरें पहुंचाते हो हालांकि वोह ह़क़ के ही मुन्किर हैं जो तुम्हारे पास आया है, वोह रसूल (ﷺ) को और तुमको इस वजह से (तुम्हारे वतन से) निकालते हैं कि तुम अल्लाह पर

الرَّسُوْلَ وَ اِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا
فِیْ سَبِیْلِیْ وَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِیْ ۖۗ
تُسِرُّوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖۗ وَ اَنَا
اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَیْتُمْ وَ مَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَ
مَنْ یَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ
السَّبِیْلِ ﴿١﴾

जो तुम्हारा पर्वरदिगार है, ईमान ले आए हो, अगर तुम मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा तलाश करने के लिए निक्ले हो (तो फिर उनसे दोस्ती न रखखो) तुम उनकी तरफ़ दोस्ती के ख़ुफ़्या पैग़ाम भेजते हो हालांकि मैं खूब जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम आशकार करते हो और जो शख़्स भी तुम में से येह (ह़रकत) करे सो वोह सीधी राह से भटक गया है।

اِنْ یَّثْقَفُوْكُمْ یَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّ
یَبْسُطُوْۤا اِلَیْكُمْ اَیْدِیَهُمْ وَ اَلْسِنَتَهُمْ
بِالسُّوْٓءِ وَ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ؕ ﴿٢﴾

2. अगर वोह तुम पर क़ुदरत पा लें तो (देखना) वोह तुम्हारे (खुले) दुश्मन होंगे और वोह अपने हाथ और अपनी ज़बानें तुम्हारी तरफ़ बुराई के साथ दराज़ करेंगे और आरज़ू मंद होंगे कि तुम (किसी तरह़) काफ़िर हो जाओ।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَ لَاۤ
اَوْلَادُكُمْ ۛۚ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ۛۚ یَفْصِلُ
بَیْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِیْرٌ ﴿٣﴾

معانقة ١٢ السباع الوقف على القيمة ١٣

3. तुम्हें क़ियामत के दिन हरगिज़ न तुम्हारी (काफ़िरो मुशरिक) क़राबतें फ़ाइदा देंगी और न तुम्हारी (काफ़िरो मुशरिक) औलाद, (उस दिन अल्लाह) तुम्हारे दरमियान मुकम्मल जुदाई कर देगा (मोमिन जन्नतमें और काफ़िर दोज़ख़ में भेज दिए जाएंगे) और अल्लाह उन कामों को ख़ूब देखनेवाला है जो तुम कर रहे हो।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِیْۤ
اِبْرٰهِیْمَ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا
لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَ مِمَّا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ٘ كَفَرْنَا
بِكُمْ وَ بَدَا بَیْنَنَا وَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ
وَ الْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰی تُؤْمِنُوْا

4. बेशक तुम्हारे लिए इब्राहीम (عليه السلام) में और उनके साथियों में बेहतरीन नमूनए (इक़्तिदा) है, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा : हम तुम से और उन बुतों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो कुल्लिय्यतन बेज़ार (और ला तअ़ल्लुक़) हैं, हमने तुम सब का खुला इन्कार किया हमारे और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और नफ़रतो इनाद हमेशा के लिये ज़ाहिर हो चुका, यहां तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान ले आओ, मगर इब्राहीम (عليه السلام) का

بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَ مَاۤ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَيْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝٤

अपने (परवरिश करनेवाले) बाप से येह केहना कि मैं तुम्हारे लिए ज़रूर बख़्शिश तलब करूंगा (फ़क़त पहले का किया हुआ एक वा'दा था जो उन्होंने पूरा कर दिया और साथ यूं जता भी दिया) और येह कि मैं तुम्हारे लिए (तुम्हारे कुफ़्रो शिर्क के बाइस) अल्लाह के हुज़ूर किसी चीज़ का मालिक नहीं हूं (फिर वोह येह दुआ़ कर के क़ौम से अलग हो गए) ऐ हमारे रब ! हमने तुझ पर ही भरोसा किया और हमने तेरी तरफ़ ही रुजूअ़ किया और (सब को) तेरी ही तरफ़ लौटना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥

5. ऐ हमारे रब ! तू हमें काफ़िरों के लिए सबबे आज़माइश न बना (या'नी उन्हें हम पर मुसल्लत न कर) और हमें बख़्श दे, ऐ हमारे परवरदिगार ! बेशक तू ही ग़ल्बा़-व-इ़ज़्ज़तवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦ ع ١ ٦ ٧

6. बेशक तुम्हारे लिए इनमें बेहतरीन नमूनए (इक़्तिदा) है (ख़ास तौर पर)हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह (की बारगाह में ह़ाज़िरी) की और यौमे आख़िरत की उम्मीद रखता है, और जो शख़्स रू गर्दानी करता है तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ व लाइ़क़े हर ह़म्दो सना है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧

7. अ़जब नहीं कि अल्लाह तुम्हारे और उनमें से बा'ज़ लोगों के दरमियान जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है, (किसी वक़्त बाद में) दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह बड़ी क़ुदरतवाला है, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْۤا

8. अल्लाह तुम्हें इस बात से मना' नहीं फ़रमाता कि जिन लोगों में तुम से दीन (के बारे) में जंग नहीं की और न तुम्हें तुम्हारे घरों से (या'नी वतनसे) निकाला है कि तुम उनसे भलाई का सुलूक करो और उनसे अ़द्लो इन्साफ़ का

إِلَيْهِمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨

बरताव करो,बेशक अल्लाह अद्लो इन्साफ़ करनेवालों को पसंद फ़रमाता है।

إِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ أَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰٓى إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

9. अल्लाह तो महज़ तुम्हें ऐसे लोगों से दोस्ती करने से मना' फ़रमाता है जिन्होंने तुमसे दीन (के बारे)में जंग की और तुम्हें तुम्हारे घरों (या'नी वतन) से निकाला और तुम्हारे बाहर निकाले जाने पर (तुम्हारे दुश्मनों की) मदद की, और जो शख़्स उनसे दोस्ती करेगा तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ أَنْفَقُوْا ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ إِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ ؕ وَ لَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ أَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

10. ऐ ईमानवालो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औ़रतें हिजरत कर के आएं तो उन्हें अच्छी तरह जांच लिया करो, अल्लाह उनके ईमान (की ह़क़ीक़त) से ख़ूब आगाह है, फिर अगर तुम्हें उनके मोमिन होने का यक़ीन हो जाए तो उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न भेजो, न येह (मोमिनात) उन (काफिरों) के लिए ह़लाल हैं और न वोह (कुफ़्फ़ार) इन (मोमिन औ़रतों)के लिये ह़लाल हैं और उन (काफ़िरों)ने जो (माल बसूरते महर) उन पर ख़र्च किया हो वोह उनको अदा कर दो, और तुम पर इस (बात) में कोई गुनाह नहीं कि तुम उनसे निकाह़ कर लो जबकि तुम उन (औ़रतों)का महर उन्हें अदा कर दो, और (ऐ मुसल्मानो!) तुम भी काफिर औ़रतोंको (अपने) अ़क़्दे निकाह़में न रोके रख्खो और तुम (कुफ़्फ़ार से) वोह (माल) तलब कर लो जो तुमने (उन औ़रतों पर बसूरते महर) ख़र्च किया था और (कुफ़्फ़ार तुम से) वोह (माल) मांग लें जो उन्होंने (उन औ़रतों पर) ख़र्च किया था, येही अल्लाह का हुक्म है, और वोह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा रहा है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَ إِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ

11. और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई तुम से छूट कर

اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ
ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ
اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ
بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ
يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ
شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا
يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ
بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ
وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ
مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا
قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ
يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ
الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿۱۳﴾

ع ٢/٨ النصف

काफ़िरों की तरफ़ चली जाए फिर (जब) तुम जंग में ग़ालिब आ जाओ और माले ग़नीमत पाओ तो (उसमें से) उन लोगों को जिनकी औ़रतें चली गई थीं इस क़दर (माल) अदा कर दो जितना वोह (उनके महरमें) ख़र्च कर चुके थे, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

12. ऐ नबी ! जब आपकी ख़िदमत में मोमिन औ़रतें अपनी बात पर बैअ़त करने के लिए हाज़िर हों कि वोह अल्लाहके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं ठेहराएंगी और चोरी नहीं करेंगी और बदकारी नहीं करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी और अपने हाथों और पांव के दरमियान से कोई झूटा बोहतान घड़ कर नहीं लाएंगी (या'नी अपने शौहर को धोका देते हुए किसी ग़ैर के बच्चे को अपने पेट से जना हुआ नहीं बताएंगी) और (किसी भी) अम्रे शरीअ़त में आपकी ना फ़रमानी नहीं करेंगी, तो आप उनसे बैअ़त ले लिया करें और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश तलब फ़रमाएं,बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

13. ऐ ईमानवालो ! ऐसे लोगों से दोस्ती मत रख्खो जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ है बेशक वोह आख़िरत से (इस तरह) मायूस हो चुके हैं जैसे कुफ़्फ़ार अहले क़ुबूर से मायूस हैं।

आयातुहा 14 | 61 सूरतुस सफ़्फ़ मदनिय्यतुन 109 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِيْ

1. जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है

الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

(सब) अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं, और वोह बड़ी इ़ज़्ज़तो ग़ल्बेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ②

2. ऐ ईमानवालो ! तुम वोह बातें क्यों केहते हो जो तुम करते नहीं हो।

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ③

3. अल्लाह के नज़दीक बहुत सख़्त ना पसंदीदा बात येह है कि तुम वोह बात कहो जो ख़ुद नहीं करते।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ④

4. बेशक अल्लाह उन लोगों को पसंद फ़रमाता है जो उसकी राह में (यूं) सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया वोह सीसा पिलाई हुई दीवार हों।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَ قَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤

5. और (ऐ ह़बीब वोह वक़्त याद कीजिए !) जब मूसा (علیہ السلام) ने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम ! तुम मुझे अज़िय्यत क्यों देते हो हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ (रसूल) हूं, फिर जब उन्होंने कज रवी जारी रख्खी तो अल्लाहने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وَ اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑥

6. और (वोह वक़्त भी याद कीजिए) जब ईसा बिन मरयम ( )ने कहा : ऐ बनी इसराईल ! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ (रसूल) हूं, अपने से पहली किताब तौरात की तस्दीक़ करनेवाला हूं और उस रसूले (मुअ़ज़्ज़म ﷺ) की बिशारत सुनानेवाला हूं जो मेरे बाद तशरीफ़ ला रहे हैं जिनका नाम (आस्मानों में इस वक़्त) अह़मद (ﷺ) है, फिर जब वोह (रसूले आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) वाज़ेह निशानियां ले कर उनके पास तशरीफ़ ले आए तो वोह केहने लगे : येह तो खुला जादू है।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾

7. और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं करता।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ
بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ
كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾

8. येह (मुन्किरीने हक़) चाहते हैं कि वोह अल्लाह के नूर को अपने मुहंकी (फूंको) से बुझा दें, जबकि अल्लाह अपने नूर को पूरा फ़रमानेवाला है अगरचे काफ़िर कितना ही ना पसंद करें।

هُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى
وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ
كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٩﴾ ع

9. वोही है जिसने अपने रसूल (ﷺ) को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा ताकि उसे सब अदयान पर ग़ालिबो सर बुलंद कर दे ख़्वाह मुशरिक कितना ही ना पसंद करें।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ
عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿١٠﴾

10. ऐ ईमानवालो ! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बता दूं जो तुमको दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले।

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ
تُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾

11. (वोह येह है कि) तुम अल्लाह पर और उसके रसूल (ﷺ) पर (कामिल) ईमान रख्खो और अल्लाह की राह में अपने मालो जान से जिहाद करो, येही तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम जानते हो।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾

12. वोह तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और तुम्हें जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा, जिनके नीचे से नेहरें जारी होंगी और निहायत उ़म्दा रिहाइशगाहों में (ठेहराएगा) जो जन्नाते अ़द्न (या'नी हमेशा रेहने की जन्नतों) में हैं, येही ज़बर दस्त कामयाबी है।

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ

13. और (उस उख़्रवी ने'मत के अ़लावा) एक दूसरी (दुन्यवी ने'मत भी अ़ता फ़रमाएगा) जिसे तुम बहुत

فَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾

चाहते हो, (वोह) अल्लाह की जानिब से मदद और जल्द मिलनेवाली फ़तह़ है, और(ऐ नबिय्ये मुकर्रम !) आप मोमिनों को ख़ुश ख़बरी सुना दें (येह फ़त्हे मक्का और फ़ारसो रूमकी फ़ुतूह़ात की शक्ल में ज़ाहिर हुई।)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع ٢ ٥ ١٠

14. ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाहके मददगार बन जाओ जैसा के ईसा इब्ने मरयम (علیہا السلام) ने (अपने) ह़वारियों से कहा था : अल्लाह की (राह की) तरफ़ मेरे मददगार कौन हैं, ह़वारियोंने कहा : हम अल्लाह के मदद गार हैं, पस बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया और दूसरा गिरोह काफिर हो गया, सो हमने उन लोगों की जो ईमान ले आए थे उनके दुश्मनों पर मदद फ़रमाई पस वोह ग़ालिब हो गए।

आयातुहा 11 | 62 सूरतुल जुमुअ़ति मदनिय्यतुन 110 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

1.(हर चीज़) जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है अल्लाह की तस्बीह़ करती है, जो (ह़क़ीक़ी) बादशाह है, (हर नुक़्सो ऐब से) पाक है, इ़ज़्ज़तो ग़ल्बेवाला है बड़ी ह़िक्मतवाला है।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

2. वोही है जिसने अनपढ़ लोगोंमें उन्हीमें से एक (बा अज़मत) रसूल (ﷺ)को भेजा वोह उन पर उसकी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, और उनके (ज़ाहिरो बातिन) को पाक करते हैं और उन्हें किताबो ह़िक्मत की ता'लीम

وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٢﴾

देते हैं बेशक वोह लोग इन (के तशरीफ़ लाने) से पहले खुली गुमराही में थे।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾

3. और उनमें से दूसरे लोगों में भी (इस रसूले मुअ़ज़्ज़म ﷺ को तज़्किया-व-ता'लीम के लिये भेजा है) जो अभी उन लोगों से नहीं मिले (जो इस वक़्त मौजूद हैं या'नी इनके बाद के ज़माने में आएंगे), और वोह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾

4. येह (या'नी इस रसूल ﷺ की आमद और इनका फ़ैज़ो-हिदायत) अल्लाह का फ़ज़्ल है वोह जिसे चाहता है इससे नवाज़ता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

५. उन लोगों का ह़ाल जिन पर तौरात (के अह़्कामो ता'लीमात) का बोझ डाला गया फिर उन्होंने उसे न उठाया (या'नी उसमें इस रसूल ﷺ का ज़िक्र मौजूद था मगर वोह इन पर ईमान न लाए) गधे की मिस्ल है जो पीठ पर बड़ी बड़ी किताबें लादे हुए हो,उन लोगों की मिसाल किया ही बुरी है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया है, और अल्लाह झालिम लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾

6. आप फ़रमा दीजिए : ऐ यहूदियो ! अगर तुम येह गुमान करते हो कि सब लोगों को छोड़ कर तुम अल्लाह ही के दोस्त (या'नी अवलिया) हो तो मौत की आरज़ू करो (क्यों कि उसके अवलिया को तो क़ब्रो ह़श्र में कोई परेशानी नहीं होगी) अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾

7. और येह कभी इसकी तमन्ना नहीं करेंगे उस (रसूल की तक्ज़ीब और कुफ़्र) के बाइस जो वोह आगे भेज चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ
مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰی
عٰلِمِ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَیُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۠ ﴿۸﴾

8. फ़रमा दीजिए : जिस मौत से तुम भागते हो वोह ज़रूर तुम्हें मिलनेवाली है फिर तुम हर पोशीदा व ज़ाहिर चीज़ को जाननेवाले (रब) की तरफ़ लौटाए जाओगे सो वोह तुम्हें आगाह कर देगा जो कुछ तुम करते थे।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِیَ
لِلصَّلٰوةِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا
اِلٰی ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ ؕ ذٰلِكُمْ
خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹﴾

9. ऐ ईमानवालों ! जब जुमुआ़ के दिन (जुमुआ़ की) नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए तो फ़ौरन अल्लाह के ज़िक्र(या'नी ख़ुत्बा व नमाज़) की तरफ़ तेज़ी से चल पड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त (या'नी कारोबार) छोड़ दो, येह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है अगर तुम इ़ल्म रखते हो।

فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی
الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ
وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰﴾

10. फिर जब नमाज़ अदा हो चुके तो ज़मीनमें मुन्तशिर हो जाओ और (फिर)अल्लाह का फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश करने लगो और अल्लाह को कसरत से याद किया करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

وَ اِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ا۟نْفَضُّوْۤا
اِلَیْهَا وَ تَرَكُوْكَ قَآىِٕمًا ؕ قُلْ مَا
عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَ مِنَ
التِّجَارَةِ ؕ وَ اللّٰهُ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ۠ ﴿۱۱﴾

11. और जब उन्होंने कोई तिजारत या खेल तमाशा देखा तो (अपनी ह़ाजत मंदी और मआ़शी तंगी के बाइ़स) उसकी तरफ़ भाग खड़े हुए और आपको (ख़ुत्बेमें) खड़े छोड़ गए, फ़रमा दीजिए : जो कुछ अल्लाहके पास है वोह खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

आयातुहा 11 | 63 सूरतुल मुनाफ़िक़ून मदनिय्यतुन 104 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ

1. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) जब मुनाफ़िक़ आप के पास

وقف لازم

اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾
اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾

وَ اِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَ
اِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ
خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ
صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ
فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى
يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَ رَاَيْتَهُمْ
يَصُدُّوْنَ وَ هُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۵﴾

आते हैं तो केहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप यक़ीनन अल्लाहके रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि यक़ीनन आप उसके रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि यक़ीनन मुनाफ़िक़ लोग झूटे हैं।

2. उन्होंने अपनी क़स्मों को ढाल बना रख्खा है फिर येह (लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं, बेशक वोह बहुत ही बुरा (काम) है, जो येह लोग कर रहे हैं।

3. येह इस वजह से कि वोह (ज़बाने से) ईमान लाए फिर (दिल से) काफ़िर रहे तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई सो वोह (कुछ) नहीं समझते।

4. (ऐ बन्दे !) जब तू उन्हें देखे तो उन के जिस्म (और क़दो क़ामत) तुझे भले मा'लूम हों, और अगर वोह बातें करें तो उन की गुफ्तुगू तू ग़ौर से सुने (या'नी तुझे) यूं मा'क़ूल दिखाई दें, मगर ह़क़ीक़त येह है कि) वोह लोग गोया दीवार के सहारे खड़ी हुई की लकड़ियां हैं वोह हर ऊंची आवाज़ को अपने ऊपर (बला और आफ़त) समझते हैं, वोही (मुनाफ़िक़ तुम्हारे) दुश्मन हैं , सो उनसे बचते रहो, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे वोह कहां बेहके फ़िरते हैं।

5. और जब उनसे कहा जाता है कि आओ रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे लिए मग़फ़िरत तलब फ़रमाएं तो येह (मुनाफ़िक़ गुस्ताख़ी से) अपने सर झटक कर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखते हैं कि वोह तकब्बुर करते हुए (आपकी ख़िदमत में आने से) गुरेज़ करते हैं। ★

★ येह आयत अब्दुल्लाह बिन उबै (रईसुल मुनाफ़िक़ीन) के बारे में नाज़िल हुई, जब उसे हुज़ूर नबिय्ये अकरम (ﷺ) की ख़िदमते अक़्दस में बख़्शिश तलबी के लिये ह़ाज़िर होने को कहा गया तो सर झटक कर केहने लगा : मैं नहीं जानता, मैं ईमान भी ला चुका हूं, उनके केहने पर ज़कात भी दे दी है, अब क्या बाक़ी रेह गया है फ़क़त येही कि मुह़म्मद (ﷺ) को सजदा भी करूं? (अत्तिब्री, अल कश्शाफ, नसफ़ी, बग़वी, ख़ाज़िन)

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

6. इन (बद बख़्त गुस्ताख़ाने रसूल ﷺ) के हक़ में बराबर है कि आप उनके लिये इस्तिग़फ़ार करें या आप उनके लिये इस्तिग़फ़ार न करें, अल्लाह उनको (तो) हरगिज़ नहीं बख़्शेगा (क्यों कि येह आप पर ता'ना ज़नी करनेवाले और आपसे बे रुख़ी और तकब्बुर करनेवाले लोग हैं।) बेशक अल्लाह ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَ لِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

7. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) येही वोह लोग हैं जो (आप से बुग़्ज़ो इनाद की बिना पर) येह (भी) केहते हैं कि (दुरवेश और फ़ुक़रा) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में रेहते हैं उन पर ख़र्च मत करो (या'नी उनकी माली इआ़नत न करो) यहां तक कि वोह (सब उन्हें छोड़ कर) भाग जाएं (मुन्तशिर हो जाएं) ह़ालांकि आस्मानों और ज़मीनके सारे ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन नहीं समझते।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨ ع ١ ٨ ١٣

8. वोह केहते हैं : अगर (अब) हम मदीने वापस हुए तो (हम) इ़ज़्ज़तवाले लोग वहां से ज़लील लोगों (या'नी मुसल्मानों) को बाहर निकाल देंगे, हालांकि इ़ज़्ज़त तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए और रसलू (ﷺ) के लिए और मोमिनों के लिए है मगर मुनाफ़िक़ीन (इस ह़क़ीक़त को) जानते नहीं हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩

9. ऐ ईमानवालो ! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (कहीं) तुम्हें अल्लाह की याद से ही ग़ाफ़िल न कर दें, और जो शख़्स ऐसा करेगा तो वोही लोग नुक़्सान उठानेवाले हैं।

وَ اَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ

10. और तुम उस (माल) में से जो हमने तुम्हें अ़ता किया

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ⑩

है (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुम में से किसी को मौत आ जाए फिर वोह केहने लगे : ऐ मेरे रब! तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक मोहलत और क्यों न दे दी कि मैं सदक़ा व ख़ैरात कर लेता और नेकूकारों में से हो जाता।

وَ لَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑪ ع ۲ ۳ ۱۴

11. और अल्लाह हरगिज़ किसी शख़्स को मोहलत नहीं देता जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है, और अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है।

आयातुहा 18 | 64 सूरतुत तगाबुनि मदनिय्यतुन 108 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

1. हर वोह चीज़ जो आस्मानों में है और ज़मीनमें है अल्लाह की तस्बीह़ करती है। उसी की सारी बादशाहत है और उसी के लिए सारी ता'रीफ़ है वोह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّ مِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ②

2. वोही है जिसने तुम्हें पैदा किया,पस तुममें से (कोई) काफ़िर हो गया, और तुममें से (कोई) मोमिन हो गया, और अल्लाह उन कामों को जो तुम करते हो खूब देखनेवाला है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

3. उसीने आस्मानों और ज़मीन को हिक्मतो मक़्सद के साथ पैदा फ़रमाया और (उसी ने) तुम्हारी सूरतें बनाईं फिर तुम्हारी सूरतों को खूब तर किया, और (सब को) उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ؕ

4. जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है वोह जानता है और उन बातों को (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो, और जो

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤

ज़ाहिर करते हो और अल्लाह सीनोंवाली (राज़ की) बातों को (भी) ख़ूब जाननेवाला है।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥

5. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने (तुम से) पहले कुफ़्र किया था तो उन्होंने (दुनिया में) अपने काम की सज़ा चख ली और उनके लिए (आख़िरतमें भी) दर्दनाक अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦

6. येह इस लिए कि उनके पास उनके रसूल वाज़ेह़ निशानियां ले कर आते थे तो वोह केहते थे : क्या (हमारी ही मिस्ल और हम जिन्स) बशर ★ हमें हिदायत करेंगे ? सो वोह काफ़िर हो गए और उन्होंने (ह़क़ से) रू गर्दानी की और अल्लाहने भी (उनकी) कुछ पर्वाह न की, और अल्लाह बेनियाज़ है लाइक़े ह़म्दो सना है।

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧

7. काफ़िर लोग येह ख़याल करते हैं कि वोह (दोबारा) हरगिज़ न उठाए जाएंगे, फ़रमा दीजिए : क्यों नहीं, मेरे रबकी क़सम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हें बता दिया जाएगा जो कुछ तुमने किया था, और येह अल्लाह पर बहुत आसान है।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨

8. पस तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर और उस नूर पर ईमान लाओ जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, और अल्लाह उन कामों से ख़ूब आगाह है जो तुम करते हो।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ

9. जिस दिन वोह तुम्हें जमा' होने के दिन (मैदाने मेहशर में) इकठ्ठा करेगा येह हार और नुक़्सान ज़ाहिर होने का दिन है,जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है और नेक अ़मल करता है तो (अल्लाह) उस (के नामए आ'माल) से उसकी

★ बशर का येह मा'ना अइम्मए तफ़्सीर के बयान कर्दह मा'ना के मुताबिक है ह़वाला जात के लिए देखें : (तफ़्सीरे त़िब्री, अल कश्शाफ़, नस्फ़ी, ख़ाज़िन, जुमल, मज़हरी और फ़त्हुल क़दीर वग़ैरह।)

سَيِّاٰتِهٖ وَ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩

ख़ताएं मिटा देगा और उसे जन्नतों में दाख़िल फ़रमा देगा जिनके नीचे से नेहरें बेह रही हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले होंगे, येह बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠ ع ١

10. और जिन लोगोंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही लोग दोज़ख़ी हैं (जो) उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ
قَلْبَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١

11. (किसी को) कोई मुसीबत नहीं पहुंचती मगर अल्लाह के हुक्म से और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है तो वोह उसके दिलको हिदायत फ़रमाता देता है, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ
فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٢

12. और तुम अल्लाहकी इताअ़त करो और रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो, फिर अगर तुमने रू गर्दानी की तो (याद रख्खो) हमारे रसूल (ﷺ) के ज़िम्मे सिर्फ़ वाज़ेह़ तौर पर (अह़काम को) पहुंचा देना है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٣

13. अल्लाह (ही मा'बूद) है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा रखना चाहिए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ
اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ
فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ تَعْفُوْا وَ
تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝١٤

14. ऐ ईमानवालो ! बेशक तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बा'ज़ तुम्हारे दुश्मन हैं पस उनसे होशियार रहो, अगर तुम सर्फ़े नज़र कर लो और दर गुज़र करो और मुआ़फ़ कर दो तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ
وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝١٥

15. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद महज़ आज़माइश ही हैं,और अल्लाह की बारगाह में बहुत बड़ा अज्र है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا
وَ اَطِيْعُوْا وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا
لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ١٦

16. पस तुम अल्लाह से डरते रहो जिस क़दर तुमसे हो सके और (उसके अह्काम) सुनो और इताअ़त करो और (उसकी राहमें) ख़र्च करो येह तुम्हारे लिए बेहतर होगा, और जो अपने नफ़्स के बुख़्लसे बचा लिया जाए सो वोही लोग फ़लाह पानेवाले हैं।

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۙ ١٧

17. अगर तुम अल्लाह को (इख़्लास और नेक निय्यती से) अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वोह उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़ा क़द्र शनास है बुर्द बार है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ١٨ ع

18. हर निहां और अ़यां को जाननेवाला है, बड़े ग़ल्बे-व-इ़ज़्ज़तवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

ع ٢ ٨ ١٢

रुकूआ़तुहा 2 | 65 सूरतुत तलाक़ि मदनिय्यतुन 99 | आयातुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ
فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا
الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا
تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَ لَا
يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ
مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ
وَ مَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ
يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ١

1. ऐ नबी! (मुसल्मानों से फ़रमा दें) जब तुम औ़रतों को तलाक़ देना चाहो तो उनके तुहुर के ज़माने में उन्हें तलाक़ दो और इ़द्दत को शुमार करो, और अल्लाह से डरते रहो जो तुम्हारा रब है, और उन्हें उनके घरों से मत निकालो और न वोह ख़ुद बाहर निक्लें सिवाए इसके कि वोह खुली बे हयाई कर बैठें, और येह अल्लाह की (मुक़र्ररह) हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हुदूद से तजावुज़ करे तो बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, (ऐ शख़्स!) तू नहीं जानता शायद अल्लाह इसके (तलाक़ देने के) बाद (रुजूअ़ की) कोई नई सूरत पैदा फ़रमा दे।

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
وَّ اَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَ
اَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾
وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ
وَ مَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ
حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ
جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَىْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾
وَ الّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ
نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ
ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّ الّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَ
اُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ
يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ
اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿۴﴾
ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَ
مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَ يُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ﴿۵﴾

2. फिर जब वोह अपनी मुक़र्ररह मीआ़द (के ख़त्म होने) के क़रीब पहुंच जाएं तो उन्हें भलाई के साथ (अपनी ज़ौजिय्यत में) रोक लो या उन्हें भलाई के साथ जुदा कर दो, और अपने में से दो आ़दिल मर्दों को गवाह बना लो और गवाही अल्लाहके लिये क़ाइम किया करो, इन (बातों) से उसी शख़्स को नसीह़त की जाती है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है वोह उसके लिए (दुनिया-व-आख़िरत के रंजो ग़म से) निकलने की राह पैदा फ़रमा देता है।

3. और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है जहां से उसका गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो वोह (अल्लाह) उसे काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा कर लेनेवाला है, बेशक अल्लाहने हर शय के लिये अंदाज़ा मुकर्रर फ़रमा रख्खा है।

4. और तुम्हारी औ़रतों में से जो ह़ैज़ से मायूस हो चुकी हों अगर तुम्हें शक हो (कि उनकी इ़द्दत क्या होगी) तो उनकी इ़द्दत तीन महीने है और वोह औ़रतें जिन्हें (अभी) हैज़ नहीं आया (उनकी भी येही इ़द्दत है), और ह़ामिला औ़रतें (तो) उनकी इ़द्दत उनका वज़्ए ह़मल है, और जो शख़्स अल्लाह से डरता है (तो) वोह इस काम में आसानी फ़रमा देता है।

5. येह अल्लाह का अम्र है जो उसने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है, और जो शख़्स अल्लाह से डरता है वोह उस के छोटे गुनाहों को उस (के नामए आ'माल) से मिटा देता और अज्रो सवाब को उस के लिये बड़ा कर देता है।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ
وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا
عَلَيْهِنَّ ؕ وَ إِنْ كُنَّ أُولَاتِ
حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ
لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَأْتَمِرُوا
بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ
فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ أُخْرٰى ﴿٦﴾ ؕ

6. तुम उन (मुतल्लक़ा) औ़रतों को वहीं रखखो जहां तुम अपनी वुस्अ़त के मुताबिक़ रेहते हो और उन्हें तक्लीफ़ मत पहुंचाओ कि उन पर (रेहने का ठिकाना) तंग कर दो, और अगर वोह ह़ामिला हों तो उन पर ख़र्च करते रहो, यहां तक कि वोह अपना बच्चा जन लें, फिर अगर वोह तुम्हारी ख़ातिर (बच्चे को) दूध पिलाएं तो उन्हें उनका मुआ़विज़ा अदा करते रहो, और आपसमें (एक दूसरे से) नेक बात का मश्वरा (ह़स्बे दस्तूर) कर लिया करो, और अगर तुम बाहम दुश्वारी मह़सूस करो तो उसे (अब कोई) दूसरी औ़रत दूध पिलाएगी।

لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ
مَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ
اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا
إِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ
عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿٧﴾ ع

7. साह़िबे वुस्अ़त को अपनी वुस्अ़त (के लिह़ाज़) से ख़र्च करना चाहिए, और जिस शख़्स पर उसका रिज़्क़ तंग कर दिया गया हो तो वोह उसी (रोज़ी) में से (बतौरे नफ़्क़ा) ख़र्च करे जो उसे अल्लाह ने अ़ता फ़रमाई है, अल्लाह किसी शख़्स को मुकल्लफ़ नहीं ठेहराता मगर उसी क़द्र जितना कि उसने उसे अ़ता फ़रमा रखखा है, अल्लाह अ़नक़रीब तंगी के बाद कशाइश पैदा फ़रमा देगा।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ
رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾

8. और कितनी ही बस्तियां ऐसी थीं जिन (के रेहनेवालों) ने अपने रब के हुक्म और उसके रसूलों से सरकशी व सरताबी की तो हमने उनका सख़्त ह़िसाब की सूरत में मुह़ासिबा किया और उन्हें ऐसे सख़्त अ़ज़ाबमें मुब्तिला किया जो न देखा न सुना गया था।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ
عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾

9. सो उन्होंने अपने किए का वबाल चख लिया और उनके काम का अंजाम ख़सारा ही हुआ।

أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ

10. अल्लाहने उनके लिए (आख़िरतमें भी) सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखखा है, सो अल्लाह से डरते रहा करो, ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ﴿۱۰﴾

अ़क़्लवालो ! जो ईमान ले आए हो, बेशक अल्लाहने तुम्हारी (ही) तरफ़ नसीह़त (क़ुरआन) को नाज़िल फ़रमाया है।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ يَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿۱۱﴾

11. (और) रसूल (ﷺ) को (भी भेजा है) जो तुम पर अल्लाह की वाज़ेह आयात पढ़ कर सुनाते हैं ताकि उन लोगों को जो ईमान लाए हैं और नेक अ़मल करते हैं तारीकियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले जाए, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है और नेक अ़मल करता है वोह उसे उन जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, बेशक अल्लाहने उसके लिए निहायत उ़म्दा रिज़्क़ (तैयार कर) रख्खा है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾ ع ۲ ۵ ۱۸

12. अल्लाह (ही) है जिसने सात आस्मान पैदा फ़रमाए और ज़मीन (की तश्कील) में भी उन्हीं की मिस्ल (तेह ब तेह सात तब्क़ात बनाए), उनके दरमियान(निज़ामे क़ुदरत की तदबीर का) अम्र उतरता रेहता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है, और येह कि अल्लाहने हर चीज़ का अपने इ़ल्म से इह़ाता फ़रमा रख्खा है, (या'नी आनेवाले ज़मानों में जब साइन्सी इन्किशाफ़ात कामिल होंगे तो तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत और इ़ल्मे मुह़ीत की अ़ज़मत का अंदाज़ा हो जाएगा कि किस तरह़ उसने सदियों क़ब्ल इन ह़क़ाइक़ को तुम्हारे लिए बयान फ़रमा रख्खा है।)

आयातुहा 12 | 66 सूरतुत तह़रीमि मदनिय्यतुन 107 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ

1. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम!) आप खुद को उस चीज़ (या'नी

لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

शहद के नोश करने) से क्यों मना' फ़रमाते हैं जिसे अल्लाह ने आपके लिये ह़लाल फ़रमा रख्खा है,आप अपनी अज़्वाज की (इस क़दर) दिल जूई फ़रमाते हैं, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ
اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ
الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ②

2. (ऐ मोमिनो!) बेशक अल्लाहने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़स्मों का(कफ़्फ़ारा दे कर) खोल डालना मुक़र्रर फ़रमा दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मददगारो कारसाज़ है, और वोह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ
اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ
وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ
وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا
بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ
نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③

3. और जब नबिय्ये (मुकर्रम ﷺ)ने अपनी एक ज़ौजा से एक राज़दाराना बात इर्शाद फ़रमाई, फिर जब वोह उस (बात) का ज़िक्र कर बैठीं और अल्लाहने नबी (ﷺ) पर उसे ज़ाहिर फ़रमा दिया तो नबी (ﷺ)ने उन्हें उसका कुछ ह़िस्सा जता दिया और कुछ हिस्सा (बताने) से चश्म पोशी फ़रमाई, फिर जब नबी (ﷺ) ने उन्हें इसकी ख़बर दे दी (कि आप राज़ अफ़्शा कर बैठीं हैं) तो वोह बोलीं : आपको येह किसने बता दिया है? नबी (ﷺ) ने फ़रमाया कि मुझे बड़े इल्मवाले बड़ी आगाही वाले (रब) ने बता दिया है।

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ
اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِيْرٌ ④

4. अगर तुम दोनों अल्लाह की बारगाह में तौबा करो (तो तुम्हारे लिये बेहतर है) क्यों कि तुम दोनों के दिल (एक ही बात की तरफ़) झुक गए हैं, अगर तुम दोनोंने इस बात पर एक दूसरे की इआ़नत की (तो येह नबिय्ये करीम ﷺ के लिये बाइ़से रंज हो सक्ता है) सो बेशक अल्लाह ही उनका दोस्तो मददगार है, और जिब्रील और सालेह मोमिनीन भी और उसके बाद (सारे) फ़रिश्ते भी (उनके) मदद गार हैं।

عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ
اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ

5. अगर वोह तुम्हें तलाक़ दे दें तो अ़जब नहीं कि उनका रब उन्हें तुमसे बेहतर अज़्वाज बदले में अ़ता फ़रमा दे

مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ
سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥

(जो) फ़रमां बरदार, ईमानदार, इताअ़त गुज़ार, तौबा शिआ़र, इ़बादत गज़ार, रोज़ादार, (बा'ज़) शौहर दीदा और (बा'ज़) कुंवारियां होंगी।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ
وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ
شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦

6. ऐ ईमानवालो ! अपने आप को और अपने अह्लो अ़याल को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान और पथ्थर हैं, जिस पर सख़्त मिज़ाज ताक़तवर फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जो किसी भी अम्र में जिस का वोह उन्हें हुक्म देता है अल्लाह की ना फ़रमानी नहीं करते और वोही काम अंजाम देते हैं जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا
الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝٧ ع ١ ١٩

7. ऐ काफ़िरो ! आज के दिन कोई उ़ज़्र पेश न करो, बस तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा जो करते रहे थे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ
تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ
يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ
يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

8. ऐ ईमानवालो ! तुम अल्लाह के ह़ज़ूर रुजूए़ कामिल से ख़ालिस तौबा कर लो,यक़ीन है कि तुम्हारा रब तुमसे तुम्हारी ख़ताएं दफ़ा' फ़रमा देगा और तुम्हें बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं जिस दिन अल्लाह (अपने) नबी (ﷺ) को और उन अहले ईमानको जो उनकी (ज़ाहिरी या बातिनी) मइ़य्यत में हैं रुस्वा नहीं करेगा, उनका नूर उनके आगे और उनके दाएं तरफ़ (रौशनी देता हुआ) तेज़ी से चल रहा होगा वोह अ़र्ज़ करते होंगे : ऐ हमारे रब ! हमारा नूर मुकम्मल फ़रमा दे और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ

9. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम !) आप काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती फ़रमाइए, और

جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩

उनका ठिकाना जहन्नम है, और वोह क्या ही बुरा ठिकाना है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

10. अल्लाहने उन लोंगो के लिये जिन्हों ने कुफ़्र किया नूह़ (عليه السلام)की औ़रत और लूत (عليه السلام) की औ़रत (वाहिला और वाइ़ला) की मिसाल बयान फ़रमाई है, वोह दोनों हमारे बंदों मे से दो सालेह बंदों के निकाह में थीं,सो दोनों ने उनसे ख़यानत की पस वोह अल्लाह (के अ़ज़ाब) के सामने उनके कुछ काम न आए और उनसे केह दिया गया कि तुम दोनों (औ़रतें) दाख़िल होनेवालों के साथ दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ لا

11. और अल्लाह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं ज़ौजए फ़िरऔ़न (आसिया बिन्ते मज़ाहिम) की मिसाल बयान फ़रमाई है, जब उसने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! तू मेरे लिये बहिश्त में अपने पास एक घर बना दे,और मुझ को फ़िरऔन और उसके अ़मले (बद) से नजात दे दे और मुझे ज़ालिम क़ौम से (भी) बचा ले।

وَقف لازم

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢ ع ٢ ٥ ٢٠

12. और (दूसरी मिसाल) इमरान की बेटी मरयम की (बयान फ़रमाई है) जिसने अपनी इ़स्मतो इ़फ़्फ़त की ख़ूब हिफ़ाज़त की तो हमने (उसके) गिरेबान में अपनी रूह़ फूंक दी और उसने अपने रब के फ़रामीन और उसकी (नाज़िल कर्दह) किताबों की तस्दीक़ की और वोह इताअ़त गुज़ारों में से थी।